अशोक

अशोक मैथिलीक यशस्वी लोकधर्मी रचनाकार छथि। मधुबनी जिलाक लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 कऽ हिनक जन्म भेलनि। विज्ञानक विद्यार्थी छलाह। रुचि आ प्रवृति छलनि साहित्य पढ़बाक आ लिखबाक। से छात्रावस्थेसँ साहित्य-रचना करय लगलाह। चाकरी भेटलनि सहकारिता विभागमे। ओहू ठाम सामान्य जनक साख बचयबामे लागल रहैत छथि। लोक-चिन्ता, लोक-हित आ लोक-उन्नति हिनक एकलव्य-दृष्टि छनि।

अशोक अनेक विधामे लिखैत छथि। चक्रव्यूह (कविता-संग्रह), ओहि रातिक भोर तथा मातवर (कथा-संग्रह) आ मैथिल आँखि (निबन्ध-समीक्षा) हिनक चर्चित पुस्तक छनि। पृथ्वी-पुत्र (ललितक उपन्यासक नाट्य रूपान्तर) तथा संवाद (संपादन) मैथिलीक बेछप पोथी अछि। पत्रिका-सम्पादनमे हिनक मौलिकता 'संधान' मे तँ देखार होइते अछि, 'घर-बाहर' सेहो ओहि क्षमता-प्रतिभाक साक्षी अछि। सोवियतसंघक यात्रा-कथा जतबे प्रकाशित अछि से बेजोड़ अछि।

'बाबाक आत्मीयता' अशोकक 'मैथिल आँखि' सँ लेल गेल अछि। बाबा माने यात्री नागार्जुन। आत्मीयता माने अपनापन। अपेक्षितारय। अशोकक कहब छनि जे यात्रीकेँ बुझबाक लेल, हुनक जीवन आ लेखनसँ परिचित होयबाक लेल आत्मीयता शब्दक व्याप्तिकेँ जानब जरूरी अछि। नीक रचनाकार होयबाक लेल नीक व्यक्ति होयब अनिवार्य अछि। नीक व्यक्तिक मतलब थिक संवेदनशील व्यक्ति, मनुष्यक सुख-दुखक भागीदार । क्षेत्र, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदिक सीमा मनुष्यकेँ बँटैत अछि, तोड़ैत अछि। राग-भावक हनन करैत अछि।

आजुक समयमे जखन सभ अपन-अपन सुख-सुविधा लेल अपस्याँत अछि- यात्रीक जीवन आ लेखन विश्व-बन्धुत्वक पाठ बनि कऽ सोझाँ अबैत अछि। दोसर बात ई अछि जे बाबाक जीवन आ लेखनमे, आचार या विचारमे भिन्नता नहि अछि। ओ पानि जकाँ पारदर्शी छथि। तँ ओ बच्चा-बुतरु, युवक-बूढ़, परिचित-अपरिचित सभक अपन समाङ छथि। सभक आत्मीय छथि।

प्रस्तुत निबन्ध बाबाकेँ बुझबाक आँखि दैत अछि।

बाबाक आत्मीयता

लोक हुनका बाबा कहैत छलनि। बाबा कहायब हुनका नीक लगनि। से बात कत्ते गोटे कहैत छथि। एक गोटा कहैत छथि जे हुनका कोनो नवयुवतियोसँ बाबा कहेबा पर आपत्ति नहि छलनि। केशवदास नहि छला ओ। कियो नवयुवती जखन हुनका बाबा कहनि तऽ हुनकर हृदयमे वात्सल्य उमड़ि आबय। भोजपुर इलाकामे ब्राह्मणकँ बाबा कहल जाइत छैक। बूढ़ो बाबा आ नेनो बाबा। ब्राह्मण दुआरे बाबा। कतेक गोटा के एहि सम्बोधन पर फूलि कऽ कुप्पा होइत देखने हेबनि। साइत ब्राह्मणत्वक मोजरक कारणे। मुदा ओ ब्राह्मण बाबा नहि छला। नागा बाबा सेहो नहि छला। संसार त्यागी ओ कोना भऽ सकैत रहथि ? संसारसँ तऽ हुनका अत्यन्त लगाओ छलनि। ओ परिवारक, गाम घरक बाबा छला। जे बाबा अपन संतानमे सुसंस्कार भरैत अछि। हँसैत तमसाइत नीक बेजाए बुझबैत अछि। संसारक कोमलता कठोरताक ज्ञान करबैत अछि। जीबाक ढंग सिखबैत अछि। हाथी-घोड़ा बनि कऽ पोता-पोती के पीठ पर चढ़बैत अछि। ओ मुँह-कान बना कऽ, नाचि कऽ संतानक मनोरंजन करैत अछि। गलती भेलापर कानो ऐंठैत अछि।

बाबाकँ बहुतरास बात पसिन्न नहि छलनि। ओ ककरो छोट नहि बुझैत छला। ककरो पैघत्वक कारणे मोजर देब ओ नहि जनैत छला। ओ अपन समाने सभकँ बुझैत छला। एक्कोरत्ती घमण्ड हुनका बरदास्त नहि रहनि। बड़का-बड़काक घमण्ड तोड़ै लेल ओ मारुक कविता सभ लिखैत छला। बाबाकँ ककरो डर नहि छलनि । कियो होथि, नेता, धनिक, अफसर, पण्डित सभकँ समाजक दिससँ ओ चेतौनी दैत छला। समाजक लेल, गरीबक लेल ओ ककरोसँ भीड़ि सकैत छला। अपन कविताक अचूक व्यंग्य-वाणसँ बेधि सकैत छला। बाबा गरीब आ विपन्नक मित्र छला। समाङ छला।

बाबाकँ गाछ बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि। मेघ देखि कऽ ओ उमंगमे नाच' लागथि। अगहन मास हुनका प्रिय रहनि। अगहन मासमे धान होइ छै। अगहनमे सभ जन, मजूर, किसानक घर अन्नसँ भरि जाइ छै। पोखरि, माछ, मखान बाबा के बड़ नीक लगनि। असलमे बाबा एकटा खेतिहर छला। खेत हुनका मोनमे रचल बसल छल। कोदारि, खुरपी, हर, खेतीमे काज आबऽ बला औजार सभ ओ कहियो नहि बिसरि सकला। ओ अपन कवितो लिखबकँ खुरपी चलायब

कहथि। कोदारि नहि तऽ खुरपीये। नहि खेत कोड़ल होइये तँ खुरपीसँ कमैनी तऽ होइये। खढ़ पात हेंठ कयल तऽ होइये। कनियो दूरक माटि पलटल तँ होइये। छोट छोट नवजात गछुलीकेँ स्वस्थ सुन्दर बनेबाक उपक्रम तँ कयल होइये। ओकरामे नवजीवनक संचार तँ कयल होइये। यैह नवजात गछुली विशाल वृक्ष बनत। धरतीक सुन्दरता बढ़ाओत। बाबा सुन्दर धरती चाहैत छला।

बाबा सुन्दर मनुक्ख सेहो चाहैत छला। एहन मनुक्ख जे ककरोसँ घृणा नहि करय। ककरो अस्पृश्य नहि मानय। संसारक हरेक वस्तु बाबाकेँ सुन्दर ओ सार्थक लगैत रहनि। ओ भेद-भाव, वर्ग, जाति नहि चाहैत छला। ऊँच नीचक भावनासँ ओ एकदम फराक रहथि। समाजमे सभ कियो समान हूअय। सभकेँ अपन जीवन अपना ढंगसँ जीबाक अधिकार होइ। जीवनमे संघर्ष के ओ सर्वोपरि मानैत छला। वर्ग- भेद देखि ओ तमसा जाथि। कोनो मनुक्खकेँ दोसराक शोषण-दमन करैत देखि हुनकामे प्रतिहिंसा जागि जाइन। बाबा अगियाबेताल भऽ जाथि। हुनकर अनेकानेक कविता सभमे ई बात कियो देखि सकैत अछि। भरि जीवन हुनकामे ई विचार बनल रहलनि।

बाबाकेँ दूटा मोन नहि छलनि। एक्केटा मोन रहनि। आचार आ विचारमे कोनो भेद नहि रहनि। सोचलहुँ किछु, बजलहुँ किछु आ केलहुँ किछु, एहन लोक नहि छला ओ। एहने लोक आइ काल्हि सभ तरि फड़ि गेल अछि। जेकर बातक कोनो ठेकान नहि होइत छैक। करत किछु आ बाजत किछु , मुदा बाबाकेँ से पसिन्न नहि छलनि। ओ जे बात सोचै छला से मोनसँ करैत छला। सैह बात बजितो छला। से कविता हो, उपन्यास हो आ कि आन कोनो रचना हो। मंच पर भाषण देबाक हो आ कि जीवनमे व्यवहार हो। सभठाम एक रंग रहथि बाबा। बाबा गिरगिट संग रंग नहि बदलि सकैत छला।

पण्डित सभ कतेक तरहक चश्मा लगा कऽ हुनका देखलनि। सभ अपन-अपन छहरदेबालीक भीतर ठाढ़ भऽ हुनका भजियबैत छला। आइयो देखैत रहैत छथि। सभ अपनामे बाबा के मिलबऽ चाहैत अछि। बाबाक नाम लऽ कऽ अपन झंडा पतक्का ऊँच करऽ चाहैत अछि बाबाकेँ अपन बनबऽ चाहैत अछि। हुनकर मुइलाक बाद ई काज आर बेसी जोरसँ भऽ रहल अछि। सभ बाबाकेँ पकड़ि अपनाकेँ ऊँच करऽ चाहैत अछि। बाबा सन अपनाकेँ कहऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा ककरो पाँजमे नहि आबि रहल छथिन। कतहु ने कतहु अधिकांश के गरऽ लगैत छथिन। लोक इस-इसो करैत हुनका भरि पाँज पकड़ऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा तऽ विपन्न लोकक हेंजमे मुसकुराइत ओहिना ठाढ़ रहैत छथि। ओहि हेंज

धरि पहुँचबाक साहस बहुतो के नहि होइत छैक । लोकक नाटक असफल भऽ रहल छैक । अपन समाङक बीचमे ठाढ़ बाबा हँसैत रहैत छथि। खिलखिल .... खिलखिल।

सौंसे भारतमे बाबाक हजारो परिवार रहनि। हजारो परिवारमे बाबा अपन यात्रामे रहल छला । दिनसँ मास धरि। परिवारक हरेक सदस्यक ओ बाबा रहथि। स्त्री आ नेना सभक तऽ ओ खास लोक छला। एकदम अपन लोक। जेकरा ओ अपन सुख दुःख कहि सकैत अछि बाबा सभकेँ नीक बात सिखबैत रहथिन। बच्चा सभ संग ओ संगतुरिया बनि कऽ खेलाइत रहथि। गृहिणी सभकेँ घर सुन्दर बनौनाइ सिखबैत रहथि। तरकारी तीमन बनौनाइ सेहो सिखबथिन। शिक्षा दीक्षामे अपन सुझाव देथिन। नोकरी चाकरी खेती पथारी मादे कोनो समस्याक समाधान करथिन। लोक हुनकर बात गौरसँ सुनय, मानय। आइ काल्हि जखन लोक अपनेमे जीबऽ चाहैये। आन परिवारमे रहबामे असुविधाक अनुभव करैये। अपने बिछान नीक लगै छै। अपने तकिया पर नींद होइ छै। खेबा पीबाक अपन खास रंग ढंग भऽ गेल छैक। तखन सोचियौ, बाबा कोना एतेक भिन्न-भिन्न परिवारमे रहि जाइत छला ? कतेक जाति, कतेक वर्ण, कतेक संस्कृतिक बीच बाबा अपन लोक भऽ कऽ जीबैत छला। जीबाक ई ढंग बाबा के कतसँ अयलनि ? अपन समाजक संभ्रान्त द्वीप सन बनि कऽ जीबऽ बला लोककेँ बाबाक जीबाक ढंग चकविदोर लगबैत अछि। बाबा अबोध बच्चा जकाँ स्वयं अपनाके बेसी कऽ कय नहि बुझैत छला। अपन समान सभकेँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहेन लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छला।

बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला। एहिठामक धरती, लोक-वेद नीक बेजाए दुःख-सुख, सम्पन्नता-विपन्नता, संघर्ष, कुरूपता, सौन्दर्य सभ किछु बाबाकेँ मोन रहैत छलनि। कत्तहु रहथि देशमे, विदेशमे अपन मिथिलाकेँ ओ नहि बिसरथि। सभठाम, सभ भाषामे ओ अपन समाजक, अपन मिथिलाक बात राखथि। आनठामक लोक बाबाक लेखनीसँ मिथिलाकेँ फेर तेसर बेर नब आँखिसँ चिन्हलक। पहिल बेर सीताक माध्यमसँ चीन्हने छल। दोसर बेर विद्यापतिक आँखिये देखलक । परिचय पौलक। मुदा हमरालोकनिक दुर्भाग्य अछि जे बाबाकेँ एहिठामक मुँहपुरुषलोकनि नहि चिन्हलनि। अपना समाजक ठीकेदार नेता, संभ्रान्त लोक, अगुआ कहाबऽ बला सभ दाँततर आंगुर काटऽ लगला जखन सौंसे देशक अखबार, पत्रिका, रेडियो, टी. बी. बाबाक देहावसान पर हुनकर चर्चा केलक। हुनका संग अपन मिथिलाक चर्चा केलक। ओना कहू तऽ इहो कोनो अनर्गल बात नहि थिक। बाबा हिनकालोकनिक लोको नहि छला। इहो सभ

बाबाक लोक नहि छथि। बाबाक लोक तऽ मिथिलाक विपन्न दलित किसान सभ छथि। जे बाबाक दाहसंस्कारमे हजारक हजार संख्यामे लोर भरल आँखिसँ हुनका अन्तिम बिदाइ देलथिन। जिनका लेल बाबा सभ दिन लिखैत रहला। बजैत रहला। जिनका बीच रहब बाबाकेँ सभ दिन पसिन्न छलनि। जिनकर जकाँ रहब, जीवन जीयब बाबाक पहिचान बनि गेल अछि।

बाबा यात्री छला। यात्राक एखनहुँ अन्त नहि भेल अछि। भने शरीरे ओ हमरा लोकनिक बीच नहि छथि। ओ बहुत रास कलम लगा गेल छथि। आइ ने काल्हि ई बीया धरती तरसँ जनमत। लगाओल कलम विशाल वृक्ष बनत। फड़त फुलायत। बाबा पुरैनिक पात पर बैसल सभ के देखैत रहता। बाबा मखान हेता। माछक आँखि सन कोनो बच्चाक आँखिमे तकता। दनूफक फूल सन कोनो बहीनकेँ सिनेह बिलहता। जेठक जरैत दुपहरियामे कोनो हरबाहक कण्ठ शीतल करता। मशीनसँ थाकल कोनो मजदूरक घाम पोछता। कोनो लोकगीत सन श्रमजीवी मनुक्खकेँ ऊर्जासँ भरि देता। दलित प्रताड़ितकेँ एकजुट भऽ संघर्ष लेल ललकारा देता। यात्रीक यात्रा एहिना चलैत रहत।

बाबा हमरालोकनिक लेल 'यात्री' छथि। मुदा सौंसे देशक लेल 'नागार्जुन' सेहो छथि। सौंसे भारत हुनका यात्री-नागार्जुन नामे जनैत अछि। हुनकर नाम किछु रहनु। ओ सभक आत्मीय छथि। एहेन आत्मीय लोक दुनियामे कम्मे होइत अछि। एहन आत्मीयता हुनकामे कतऽसँ अयलनि ? अपन लोक संस्कृतिसँ । मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। ई आत्मीयता हमरालोकनिकेँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

शब्दार्थ

वात्सल्य – बच्चाक प्रति स्नेह
समाङ – अपन लोक
कमैनी – खढ़ पात साफ करब
हेंठ – नीचा उतारब
गछुली – छोट गाछ
अगियाबेताल – साहसपूर्वक कठिन कार्य करयवला
तीमन – दालि। झोरगर तरकारी
चकविदोर – अति आश्चर्य

दनूफ - एकटा उजर फूल जकर उपयोग भरदुतियामे होइत अछि।

कलम - डारि मे डारि जोरि लगाओल गाछ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) अशोकक रचना छनि

(क) बाबाक आत्मीयता (ख) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

(ग) पर्यावरण (घ) चन्द्रमुखी

(ii) 'बाबाक आत्मीयता' क रचयिता छथि

(क) रतनेश्वर मिश्र (ख) अशोक

(ग) जयकान्त मिश्र (घ) तारानन्द वियोगी

रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) बाबाकेँ बहुतरास .... पसिन्न नहि छलनि।

(ii) बाबा .... बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि।

(iii) पण्डित सभ कतेक तरहक चसमा .... हुनका देखलनि।

शुद्ध-अशुद्ध वाक्यकेँ चिह्नित करू-

(i) बाबा कहायब हुनका नीक लगनि।

(ii) ओ अपना सामने ककरो किछु नहि बुझैत छला।

(iii) बाबा एकटा खेतिहर छलाह।

(iv) अगहन मास हुनका प्रिय नहि रहनि।

(v) बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला।

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) बाबाक आत्मीयतासँ की तात्पर्य अछि ?

(ii) बाबाकेँ की सभ पसिन्न छलनि ?

(iii) बाबाकेँ की सभ बात पसिन्न नहि छलनि ?

(iv) सौंसे भारत हुनका कोन नामे जनैत अछि ?

(v) आत्मीयता हुनकामे कतसँ अयलनि ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठक आधार पर 'बाबाक आत्मीयता' क वर्णन करू।

(ii) बाबाक चरित्र चित्रण करू।

(iii) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकेर सारांश लिखू।

(iv) बाबा सभक आत्मीय छथि। कोना ?

(v) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकरे प्रासंगिकता सिद्ध करू।

4. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू:

(i) अपन समान सभकँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहने लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छलाह।

(ii) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता हमरालोकनिकँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

गतिविधि-

(i) निम्न लोकोक्तिकँ वाक्यमे प्रयोग करू:

फुलि कऽ कुप्पा, गिरगिट सन रंग बदलब, दाँत तर आंगुर काटब।

(ii) बाबाक व्यक्तित्वक चर्चा छात्र आपसमे करथि।

(iii) बाबा मैथिलीमे यात्री आ देश भरिमे नागार्जुन नामसँ प्रख्यात छलाह। - हुनक दुनू नामक सार्थकता छात्र स्पष्ट करथि।

(iv) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। कोना ?

निर्देश -

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे यात्रीजीक रचनासँ छात्रकँ परिचित कराबथि।

(ii) नागार्जुन नामसँ ओ कोना देश भरिमे प्रख्यात छथि-शिक्षक छात्रकँ जनतब कराबथि।

(iii) यात्रीजीक कविताक सस्वर पाठकऽ छात्रकँ शिक्षक सुनाबथि।